

॥ श्रीगुरुभ्योयुनमः ॥ श्रीसतगुरुभ्योयुनमः ॥  
 ॥ श्रीसारदाभ्योयुनमः ॥ श्रीसतकुरुणास  
 गरश्रीकुवेरस्वामीमाहारजनीक्रीपाथी  
 सीसंतबावनीगंध्यप्रारंभते ॥ अथमंगल  
 चरण ॥ छंयेयेछंद ॥ ऊंबंडगुरुचरनसरन  
 सोमथकरतारंन ॥ तीतुसांततजुगईसधीस  
 दसुसीरसरदारंन ॥ १ ॥ सकलदेवंतकेदेवने  
 ववीतवजीतवीलोकहु ॥ स्ववातीतसरमज्ञ  
 अंगअनुभवअवीलोकहु ॥ २ ॥ पथंमअंगचर  
 चैनयेनधरेविपुवीलासक ॥ करतनीवासजं  
 नसंतसुषदतीजभोवंतसुधायक ॥ ३ ॥ दीव्यत  
 नुघेनश्यांसबंदनपरचंडवीराजीत ॥ दीघंतक  
 मलदधीमहायक्रीपातीधसुरतनघारीत ॥ ४  
 चरणचीनवरन्येहसंतसुहसुतोसजनजेन  
 मंगलकरनवीघंतहरंतधरतध्यांतपावंन  
 करन ॥ ५ ॥ करुनातीधभगवांनकरुनाक  
 रीजगपरघाडी ॥ हेतमदनमतमोदअंशरषी  
 फेडीसबजाडी ॥ ६ ॥ श्रीसतकुवेरसरणपणांस  
 करुकरजोरी ॥ नारण्यदासअस्तुसकरुनाकर  
 मतीममजोरी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ मंदमतीममजानके ॥  
 वसोहर्देसेजाय ॥ ईशाअंतरउपती ॥ गावागुन

सीहं

॥१॥

महीमाय॥१॥सुगेयौईयाकरी॥मेटेरुचौदेईले  
क॥पंगुमनोरथयौकरे॥चहुमेरुएफोक॥५  
सजांएकुसीवीनती॥सरवज्ञेसासात॥ना  
राणपदासनीमीतमात्र॥आरोपणवचनात  
१०॥श्रीमतकुवेरकरुणाकरी॥तबकरुअ  
सरकीछांण॥ज्यौगांधुववाजावीये॥बजावि  
तेसीवांण्य॥११॥संपुर्णः॥चौपाई॥ककाकैव  
लएकअघंदा॥चुहदश॥सरसपीडबुंहांडा  
अपीतअजोत्यअरसजीतुधांमा॥वीप्रवधा  
रधणीसरलसवांमा॥१॥नांमरुपगुनतीत  
वीतजीतुपेखा॥उपमायोग्यतहीपुरसअ  
लेपा॥२॥सरवितलेखलसवेषवीलेकु॥सत  
गुरुसांमधग्यंमदेईमोकु॥सीरगुणतीरगुण  
तीतनीजत्यारा॥सोईकैवलखुदसरजंनहा  
रा॥आपकपदवीनयेवीधीभाखु॥भासवी  
भासअतवेगतीजाषु॥३॥भाससकत्यघटआ  
पकसारा॥वीभाससुरसबसेतेहीत्यारा॥सु  
रव्यापकगतीअवसमजावु॥चरअचरापती  
बीबलहावु॥४॥भासवीभासभीनमतकेता  
समजावुसमकीजेहीवेता॥वीनुअपबीवभा  
सेनहीकबहु॥कोटीउयायसरमकरेसबहु

461

१॥

॥ ५ ॥ सुरस्रीधांतकैवलतीजन्यारा ॥ ब्रह्मभासया  
 पकउजीयारा ॥ बीबअंशघटभीनअपारा ॥ ची  
 दाभासमेदरसदेदारा ॥ ६ ॥ अंशबीबसुरकैव  
 लसजाती ॥ चीदाभासब्रह्मकीहेताती ॥ तनु  
 सबतत्वमतएहीषंडा ॥ ककाकैवलएकअंष  
 डा ॥ ७ ॥ दोहा ॥ सुदकैवलकरतारकु ॥ उपनोहे  
 तउमेदा ॥ षटवृतीप्रथुउतपंतकरी ॥ षगटकी  
 येहतनुकैदा ॥ ८ ॥ चोरास्रीलक्षतंतको ॥ की  
 नोतत्वजमाव ॥ अंशभीनवृतीओलवे ॥ ग  
 योअहंगषुदभाव ॥ एतेहीअंशषुददरस  
 कु ॥ श्रीमत्कुवेरसुलस ॥ नारणदासनीर  
 मेभये ॥ गहीचरनरजपक्ष ॥ १० ॥ इतीश्रीसी  
 धांतवावतीगंधेनामप्रथमोअंगसंपूर्ण ॥ १  
 चौपाई ॥ खखामतकरोतंनखरजाई ॥ अखं  
 डस्वरूपसेरहोल्होलाई ॥ अखंडअलगखर  
 पदसमभाव ॥ पंचतनुततकोसकहावु ॥ १ ॥  
 अंतसकरणप्रवस्तांबांती ॥ दशईडीसबसे  
 सरसांन ॥ अधीछांततीतेकेपुनीओरु ॥ पक  
 ररहेतंनमेसबठोस ॥ २ ॥ चरणईडीवासुदे  
 वबीराजे ॥ गुदछांतगवरीसुतराजे ॥ उपरु  
 अजवीसुनाभीनीरस्त ॥ हरदेतीरंजनका

सीधं

॥ २ ॥

हेदस्त ॥ ३ ॥ कं वसीव अवीकासहेवहनी ॥ रसना  
वरुणग्रहतरससर्वनी ॥ करनवासोद्रीगया  
लकहेवु ॥ अगुटीरुणंसक्तीसुधलहेवु ॥ ४ ॥ र  
हेनासायेअस्वनीकुवारा ॥ लेतहीबाससक  
लकीसारा ॥ त्वचामारुतकरईडीबीराजे ॥ स  
सीसुरद्रीगनजुगलदोहराजे ॥ ५ ॥ गगंनमंडल  
सहस्तरदलजोती ॥ जांहांदशुत्यादवजतबहु  
जुगती ॥ प्राणअपांनसमांनम्यांनजेही ॥ उदं  
नपंचमोकहोअबएही ॥ ६ ॥ नागकोरमक  
रकलतंतमांही ॥ देवदत्तधनंजेरहोतंतनष्टंही  
एहीसबसाजसकलस्वरजांते ॥ अक्षरआत  
महेपरमांनो ॥ ७ ॥ अक्षरातीतपरमात्मापोत्ये  
बुंअमांहीलीनभीतनहीजोत्ये ॥ एसबकेसी  
रपरलाभाई ॥ खखामतकरोतंतनस्वरजाई  
८ ॥ दोहा ॥ अक्षरतंतअक्षरआतमा ॥ परमात्म  
अक्षरातीत ॥ धेपरमात्मपदको ॥ केवलअंस  
सवीत ॥ १ ॥ केवलवलवीनुवस्तहे ॥ वलवस्तु  
वीलजाय ॥ नांमरुपगुनवलथकी ॥ नीजवीतते  
तसराय ॥ २ ॥ तेहीसरायंनसतगुरु ॥ श्रीमतकु  
वेरसुलस ॥ नारण्यदासनीरभेभये ॥ अहीच  
रनरजपस्य ॥ ३ ॥ इतीश्रीसीधंतवावनीगंधी

तीयोऽंगः ॥ २ ॥ चोपेइ ॥ गगागुरुग्यंमंगम  
 अपारा ॥ नीगंमचतुरकरेनयेतीपोकारा ॥  
 पुनीअबनीगंमजाहीउतपांने ॥ गुरुसंमत  
 ग्यंमदेईजबजांने ॥ १ ॥ वीधीमुखपुरवरघुवेद  
 कीयेउ ॥ व्यायनीगंमगौतंमनीरमयेचु ॥ सुष  
 हीदक्षनजजुरहीजसभाखे ॥ साहास्त्रमीमं  
 साजयेमुनीदाखे ॥ २ ॥ पछंमवदनवीधीस्यं  
 मउपाये ॥ साहास्त्रवेदांतव्यासताईतेनीपा  
 ये ॥ उतरअथरअजमुखसेएभयेउ ॥ साहा  
 स्त्रत्रीयेत्रीयेपुरसनीपयेउ ॥ ३ ॥ ज्ञानादकसा  
 हास्त्रवीसेसीमतभाखे ॥ पातांजलीसेसपु  
 गटकरीदाखे ॥ कपीलमुनीसारखभाखेनीगं  
 मसे ॥ नीगमतेसाहास्त्रकीयेहुवीलोकनसे  
 ४ ॥ वेदवीतसाहास्त्रसतभेद ॥ द्वादशलक्षपु  
 गटकीयेवेद ॥ रघुवीतसदचीद्वानंदपदही  
 अहंमबुंलअसीएजजुरकोसदही ॥ ५ ॥ तंम  
 तदअसीपदसंमसरोये ॥ अथरअयंगअहो  
 नीरमलहीगाये ॥ नीगंमचतुरवीलोकनको  
 जेपदही ॥ सुलसारांसनीजलक्षकोवदही ॥ ६ ॥  
 नीगंमनीरुपस्वरुपसराये ॥ प्रकतीपुरुषबुं  
 लताईजसगाये ॥ नयेतीभावदावतीतहीपोका

सीधं

॥ ३ ॥

रा॥ गगागुरुगुंमअगमअपारा॥ ७ ॥ दोहा॥ अ  
परंमपारपरमपदा॥ लहेनांकोहुजांहांन॥ परम  
गुरुगुंमलायके॥ प्रगटकीयेमहीसांत॥ वासी  
तीपरखुदसधारीके॥ प्रगटकीयेहुनीजसार  
अरथअगंसतीजनैनवीना॥ लहेनांवीनको  
ईयारा॥ ८ ॥ चारवीनादेईसकेतही॥ श्रीमत्कु  
वेरनीजलक्ष॥ नारणदासनीरभये॥ ग्रही  
चरणरजयक्ष॥ १० ॥ इतिश्रीसीधंतबावनीगं  
थेत्रतीयोअंगः॥ ३ ॥ चौपाई॥ घघाघरनीजअंत  
सबनको॥ सुदेहमगजगप्रसीधदेवनको॥ दि  
वप्रसीधजसगुप्तदेवाधी॥ नीजपतीकीभक्ती  
कोहुनहीसाधी॥ १ ॥ ताकोकुहुमेदृष्टांतअनु  
या॥ सजनहरदयेग्रहीकरहोनीरुपा॥ जेही  
रुणवरतनुस्त्रीरसबनका॥ अवत्यजनुतीप  
तीघंनहेगगंनका॥ २ ॥ अरधमुखअंकुरपती  
उरा॥ देखोएहीरुणवरजडकीगतीफुरा॥ बस  
तरणजलयनडीवेली॥ अधीकनुंन्यएकएक  
पिहमेली॥ ३ ॥ एहीथीरतनुमेकोईहेकीनुकर  
ता॥ देखीअधीकअधीननहीवरता॥ नीजअ  
कुरआसघंनसांहांमी॥ नीजपतीसंमनही  
थीरतेहीदांमी॥ ४ ॥ देखोएहीथावरसजन

परहेतु। सर्वनीज आस एकमतनेतु। चीदनी  
 जजननी भोमी भवजां मे। लोकचतुरदशव  
 सवीरं मे। ५॥ वोसत परमपती केवलसघं  
 नही। फसी ईतवृती अधीतुं नमनही। खुद  
 पती पसनु नही नकोई हेतु। नीजभक्ती वी  
 नारी तातं तखेतु। ६॥ आपत्ये अधीक देवलही  
 करे वंदन। वेहेतं नतापत्री येत्री यान भंजन।  
 वीतुनी जपुरुष उरस उरसाता। खुदखावंत  
 पदसे जंनमाता। ७॥ मातामस्त देवांता दुलम  
 अजब खुमारी सरुपके हलमे। पसावतसो सरु  
 रुपजेतवनके। घघाघरनी जअंत सबनके  
 ८॥ दोहा। पसावतनी जपदलही। एवाजव  
 रलाकोय। सुचरईत पदअटकीया। रह्यास  
 कलभवभीय। ९॥ भवदुष भंजन करनकु।।  
 खुदकु खरीवी चारा। तेही अदेशा उरधरी।।  
 आयेहदी मतनु धारा। १०॥ स्यांमवदत सोभा  
 अती। श्रीमत्कूवेर सुलस्य। नारण्यदासनी  
 रमेभये। ग्रही चरणरजपक्ष। ११॥ इती श्रीसी  
 धांतबावनी गंधे चतुरथो अंगः। १४॥ चौपैई  
 नन्यानी रमेपद अवत्यासी। ताकी सरनस  
 दासुखराशी। एही सुखसीर समापनमापु

(सी ६)

॥४॥

क

ग्रह तही जंत जे ही छोड ही आयु ॥१॥ छुट ही आ  
प व्यापक पद पर्या ॥ या वीधी से अद्वैत मत दे  
र्या ॥ देख नहार न चंत न चीत मे ॥ सर्वदा वी क  
माल कम त वी त मे ॥२॥ वीत की वी गत्य अब सु  
तो सुहस जंन ॥ समरुत जे ही जंन होय गुरु भं  
जंन ॥ देश परगना नगर ही जे नयंता ॥ ब्रुते अधा  
लुंन्य नराधी पखवंता ॥३॥ कुत ही काज परख साच  
समंधु ॥ कर ही कांम दांम देवे दीन बंधु ॥ भुपती  
अमल चराचर सभरा ॥ व्यापक वत परख वीत वी  
नुन भरा ॥४॥ ग्रभीत न भनु ब्रु जीत न ही कोई  
अमल अवांतर अमली होई ॥ स्नेहन अमल स  
रजे न ही कोई ॥ करत न न भक्यु हरत न जोई  
५ ॥ सजन सुलय मे सम जो ए ही सांन ॥ देखो  
नी जड़ी गंन छोडी अभी सांन ॥ छुट ही मांन म  
नोरथ मन मुगता ॥ सर व्यज्ञ स्वरूपो हं भये जे  
ही भुगता ॥६॥ भुगता भेद लहत न ही कोई ॥ अ  
जब कला कायं मगती तोई ॥ चर अचरा गती  
अंश वीला सी ॥ नत्या नीर भे पद अवत्या सी ॥७  
देहा ॥ अवत्या सी उदे करे ॥ नासवंत जग जोई  
जग व्यवहारी कवी शकजे ॥ अलग रहे सब को  
ई ॥८॥ पती वादी को पसहे ॥ जग को उदे वी चार



अवन्यासीसेकौंभयो। तासवंतसंसार। १।  
 सतपुरसकोसंकल्प। भयो जथा मत जंम। ३।  
 पजेसमेसोसंकल्प। पुरसहेजंमनोतंम। १०।  
 सोपुरसपरमतनुधारके। प्रगटे श्रीमतकु  
 वेर। नारणादाससरणांगत। सीटगयेभव  
 केफेर। ११। **इतीश्रीसीधांतवावनीगंथेपं**  
**चमोअंग। ५। चौपा। चचाचीतवंनतीजचर**  
**नकमलसे। नभवतुभवीतस्वमेवगुरुकल**  
**से। गुरुकलनीजबलमलवीनुमालका। वी**  
**सेसवीभुतीअतीबडाजीनुतालक। १। ताल**  
**ववतजीनुतलवपतीनकी। वीसीयानंदअ**  
**सतजतरतीनकी। रतीपतीउभयेछोडेप**  
**तीपखसे। अलीलअसकसीतसमंधसो**  
**दखसे। २। छुटतसमंधसुरसंघलयजीपाई**  
**नीरमलरुपपुरवकादेखाई। पुरवसमंध**  
**परमगुरुकरता। बंसानंदसुखदेईअघहर**  
**ता। ३। बंसभोगत्येयोगक्रताकेसमंधा। त**  
**नोअस्मीअसछुडछादेहुसमंधा। भयास**  
**र्वज्ञवीभक्तीवीलोकी। धंत्यगुरुदेवमेवदीये**  
**अलोकी। ४। गौपदवतधरतीअसमांना**  
**कंचीतजगतक्याहाउनमांना। पतापपरम**

॥ सी द्वा ॥

॥ ५ ॥

गुरुक्याहामसवरनु ॥ कहतनांपोचतहीजोर  
अरवरनु ॥ ५ ॥ दीनबंधुबंधीघोटुसबकहही ॥ ये  
सेहीपरमगुरुकोईजंनलहही ॥ परसतगुरु  
पददरसतदेवा ॥ आपनपुपतीपदलहतहीभ  
वा ॥ ६ ॥ भावीकभवमांहीभयेमरुवता ॥ हुत  
अनुहुतुकोईकरेअबधुता ॥ कहीकलपकी  
सुलभागेगुरुपलसे ॥ चचाचीतवंननीजच  
रनकमलसे ॥ ७ ॥ दोहा ॥ श्रीगुरुचरनकमलर  
ज ॥ दलदरपंनमंजुकाई ॥ सकाभयेअंतसक्र  
ण ॥ तीजअनुभवप्रगटाई ॥ १ ॥ प्रगटाअनुभ  
वसुरजव ॥ तबहीभयेप्रकाश ॥ अबहीरजनी  
काहारहे ॥ जोतीअंततउजास ॥ २ ॥ गुरुसुर  
ज्ञानप्रकाससे ॥ रहेक्याहांतंमअज्ञान ॥ श्री  
मतकुवेरसरव्यज्ञही ॥ नारण्यदाससतमान  
३ ॥ इतीश्रीसीद्वंतबावनीगंथेषष्टमोअंगः ॥ ६  
चौपई ॥ छछाछोतुमपुरसपुरांना ॥ क्पावीनवु  
मीईअकलवेरांना ॥ तुमहोचतुरसुजांनचकं  
दा ॥ हरहोकवीनकलिमसजगफंदा ॥ १ ॥ अक  
लहोसकलवीश्वउपकारन ॥ चोदतबकआ  
पनेकीयोधारंन ॥ सुध्यसंकलयाहासबज  
गभयेउ ॥ बीनुहुसरमततुवीवीधीनीपयेउ

२। बनें स्रमबी तुम्रमको हुनवजाने। सुप्र  
 के स्वस्म कपां से भये क्पा समाने। हेनही जुग  
 लभया हे सोई जाना। एको हंग बहु सोई एक  
 ही नीद्याना। ३। ज्यों त देखे लख्या लन ही भं  
 ना। आदे अंत्ये तट मध्य ख्या लही चीना। देव  
 त ख्या ल खुसी सब भये उ। कुन म म कपां से  
 आया कुने नी रमये उ। ४। जंमको हु जंन बा  
 हुरा भया आधी। पुरव समंध सुध समऊन  
 लाधी। फसे ईति फंदनी गम चुहु जोला। त्री  
 गुन की रप करत जीव जोला। ५। त्रसा करण  
 डारी दल जीव का हरीया। ये सी लक्ष चुहु लस  
 मांही फरीया। हरही जीव जीवन सब हरही  
 उत नही जावे कोई जीत तीत फी रही। ६। द  
 यावंत पती अतंत क्रीयाला। उपजी मे हे र  
 अती अधी करयाला। जंन ही का जम बुत  
 नही धरं ना। ७। घषा घोत म्यो पुरस पुरं ना।  
 ७। दिहा। पुरं ना परमेश्वर। सबके नी जक  
 रता र। सरवा तीत सर व्यज्ञ मे। भये सोई भी  
 न अवतार। ८। सां मबदन की सुंदी रता। सो  
 भावरनी न जाय। सारद सेसन कही सके  
 और की कुन चलाय। ९। सुख सागर सर रं

गत भये सो सुगत ही संत ॥ श्री मत् कुवेर पत्नी  
 परमधी ॥ नारण्यदा सलहे नही संत ॥ १० ॥ इति  
 श्री श्री शंभु वावनी गंधे सप्त मोक्षंग ॥ ७ ॥ चौपै  
 ॥ जजा जोगनी जगुरु सै करना ॥ प्रवर उपाधी  
 सब पर हरना ॥ जोगन की जुगस कहहु मज  
 बुता ॥ सुध सने हे गे हे होय प्रबधुता ॥ १ ॥ चर  
 नको योग प्रकं माफी रना ॥ हस्त पीत सेवा आ  
 चरना ॥ निन नीर घे गुरु बदन वी लोकी ॥ स्व  
 न सुने सुभव चन अ लोकी ॥ २ ॥ ना सीका सु  
 वास चरन कमल की ॥ अहो नी स एकता बी  
 चरे नही पल की ॥ बदन लगन गुरु जस गुं नगा  
 ये रसना प्रसादी चरणों मृत पाये ॥ ३ ॥ गुदरु  
 र्छी ती गुरु ध्यान समे धी रा ॥ उपरु प्रसक  
 वरु करे संमही रा ॥ त्वचा पर सपर ली न डंड  
 वत से ॥ एही वीधी लगत करत योग मत से  
 ४ ॥ मंन संकल्प गुरु म सुह अनाथ ॥ बुधी को  
 नी श्रये सरवे स्वर नी जनाथ ॥ अहंकार को तो  
 ल गुरु हे सर्वा तीत ॥ चीत को लगन म मलु हेत  
 ही वीत ॥ ५ ॥ योगन की एकता लगन लसला  
 धे ॥ सम ग्रे स्वरुप मे समंध सुध बाधे ॥ जेही  
 गुरु प्रंग सुसंग सचंता ॥ तिहे जंन जांती जोगम

तवंता ॥ ६ ॥ एहीवीधीप्रसतपरमगुरुपदकु  
 भयेल्होकुंदनजेसेपारसपरसकु ॥ बीजोगी  
 जगतमेसनेहसदधरना ॥ जजाजोगनीज  
 गुरुसेकरना ॥ ७ ॥ दोहा ॥ योगमतनीजरक  
 तायको ॥ गुरुसेलगनलगाय ॥ अरसपरस  
 संमरससदा ॥ प्रेमअनंगवसथाय ॥ ८ ॥ सुध  
 सनेहेसरव्यांगन्ये ॥ भजेकीवीरलाभेख ॥ श्री  
 रवीजोगीवीश्वही ॥ लहेकीसवीधपदहीअले  
 ख ॥ ९ ॥ अलखलखवावंनलक्षजे ॥ श्रीमत्  
 कुवेरभवतार ॥ नारण्यदासबलहारही ॥ अ  
 गणीतअंशआधार ॥ १० ॥ इतीअप्रिीद्वंतवा  
 वनीगंथेअएमोअंगः ॥ ११ ॥ चोपडीफफाफाह  
 रजसजगवीस्तारा ॥ परमदयालगुनअग  
 मअपारा ॥ चरंनकमलमुकरंदकेकारंन ॥  
 धरतअसकमंनमधुपहमारंन ॥ १२ ॥ गोवंनच  
 तुरदशभुपकेनाथा ॥ तीगुणातीतवीतवी  
 स्थाता ॥ जुगमनलीनदीउचरनसोभाये ॥ न  
 खडुतीअरकसमान्यसोहाये ॥ १३ ॥ मीहतंम  
 नीकटनआवेकबही ॥ धरतध्यांनजेतीरंत  
 रूपवही ॥ जंनकुअधीकमंनमोदबडावा  
 परमगुरुपतीधुंन्यतुंमआवा ॥ १४ ॥ सुंदीरस

स्त्री श्लो॥

॥७॥

पद्मतीक्ष्णधीकसोहावंन॥जनकामलीनमं  
नभयेत्प्रतीपावंन॥बाहुप्रलंबुवीसालसोभी  
ता॥सरोरुहपलवलक्ष्मोपीता॥ध॥चंद्रव  
दनसुधासंमसुभवचनं॥द्रीगंनजुगमजल  
जारुहरचनं॥अधुरत्नरुणरंगचोत्तरसी  
कवर॥दसनमणीउज्वलमोतीधरा॥सुंदी  
रनासीकात्रवेणीकपालंकेसरीतीलक  
मनीहरभालं॥अंगघंनश्यामद्वादशसुर  
सोभे॥धरतध्यांनसंतजंतमंनलोभे॥धलो न  
चरनभंनरहेतीतभवमे॥होयनहीएकता  
अलगवीसेद्वमे॥द्वमेदाऊंननहीनीरा  
संबन्यारा॥ऊंऊंहरजसजगवीस्तारा  
॥७॥दोहा॥सुनीजससरणांगतभये॥गधेभ  
वसंसेसुख॥मंनमतबालाहोयके॥पायाल  
सुप्रमुखा॥८॥भयाधंन्यवंतनअंतही॥अखु  
दखजोनापाय॥धंन्यगुरुधंन्यगुरुधंन्यगुरु  
एकजीभ्यातिक्याजसगाय॥९॥जसजाहरजु  
गमेभया॥हररुमैरामंन॥अमिमतकूवेरके  
चरनमे॥नारणादासतंनमंन॥१०॥इतिश्रीश्री  
ध्यांतवावनीरंथेनवमंअंगसंपूर्ण॥चौपाई  
नत्यात्यावसमकेनीजज्ञानी॥अकलकला

गत्यहेजगघांती ॥ अनुभवपषदषदलमेन  
 दाऊन ॥ बुझानंदरसभसेतनुभाजन ॥ १ ॥  
 भुगताभवमेभवतुनहीभुगते ॥ वीचरतम  
 नंतगतीवंतजुगते ॥ भईतलभुगतेतीभव  
 नहीतारे ॥ दष्टांतकरुहनीरूपणीरधार  
 २ ॥ चरममसकतंनपवंतभराई ॥ तरंनतो  
 इगहेकोईपारजाई ॥ जेहीतरबुभरबुतेही  
 भारे ॥ कोटीउपायतरेनहीतारे ॥ ३ ॥ औरद  
 षांतसुनीसजनेतु ॥ समऊतजेहीजंनहोय  
 बडवेतु ॥ वरतएकादशीकरेकोईभगता ॥ त  
 जीअंनफलफुलग्रहेमंनसुगता ॥ ४ ॥ पोहो  
 रचतुरवतरहोअपवासी ॥ करभुगतेअंनव  
 तगयेनाशी ॥ दष्टांतजुगलवीकसमजीवरा  
 वो ॥ करीअनुभवसदसीघांतसरावो ॥ ५ ॥  
 पुरवआद्यअसरमतजेह ॥ कहतेहीलसस  
 नंधवततेह ॥ भारअगरवनस्युतीजाती ॥  
 भीतवरंनउतपनएकनाती ॥ ६ ॥ लघुदीर  
 घकहीपुजअयुज ॥ तत्वसंभभागसघलीसं  
 मसुऊ ॥ उतपतीजलवीनाओरनजांती ॥  
 नत्यात्यावसमकेतीजजांती ॥ ७ ॥ दोहा ॥ च  
 सतरणजरजातही ॥ पतडीबेलएपंच ॥ इस

॥ सीधां

मेसबसोधेमीले ॥ बतसपतीकोसंच ॥ ८ ॥ उ  
तपतीजलसेजलवडे ॥ सीचतजलहीसमी

॥ ८ ॥

य ॥ जलसबसेत्यारारहाजांनतहेसबकोय  
६ ॥ जांनेपणमांनेनही ॥ ताकेसीरसमसेर  
नारणादासनीश्रेकहे ॥ देसोदाश्रीमत्कुवेर

१० ॥ इतीश्रीसीधांतबावनीगंधेदशमोच्छ्रां १०  
संपुर्ण ॥ टटाटलेतेटालोनीजमनथी ॥ अनीत्य

वृजीतकरेसुखहेतेवंनथी ॥ कुहदष्टांतधीर  
जमंनरायो ॥ करीथीरमंनसुध्यसमरुही

दारवो ॥ १ ॥ ज्यौंदधीगंधतकरनहीभीना ॥ वृ  
जीतउभयेबीनुभयेदोहृषीना ॥ तंनदधीत

त्वतकरकरेभीना ॥ साखीगथवृतीभयेर  
सखीना ॥ २ ॥ तुषनहीउभयेखपतभवभावे

जुगलजंमनुतंमदोईकांमप्रावे ॥ नाजतर  
एसमलीतसमसंगा ॥ कररवीकाटकुटक

रेतीनुभंगा ॥ ३ ॥ एकअंगदोउकीयेजीनुभा  
गा ॥ मनुसग्रहतअंनपसुत्रणरागा ॥ यस

एककुहसंसेसवनासे ॥ साल्मपरआलर  
हेतांडुलनभासे ॥ ४ ॥ तरणरुलसुसमतंन

आलकारणबीचमहाकारणनीजआल ॥  
चितनचतुरतनुचतुरहीराछे ॥ सजंनसमजी



तेही कहु वीधी आछे ॥ ५ ॥ अनुखल सत संग सु  
 सल सुबी चार ॥ सुप सदसाहास्र सतगुरु क  
 रयार ॥ छरन छेदनतनु चतुरवी भागा ॥ अंश  
 तां डुलत त्वातीत अनु रगा ॥ ६ ॥ दास्र अनल  
 समलीत संम संग ॥ तत्व का ए अं स अंग  
 न्य अ भंग ॥ संजुक्त सरे नही कां म अंग त्पथी  
 टटा टले ते टालो नी जमं नथी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ टलने  
 का तो तत्व हे ॥ मी ले सी चेतं न माहादा ॥ स्वजा  
 ती सुख उपजे ॥ वीजाती वीखवा व ॥ ८ ॥ अंश  
 उदे जी न से भया ॥ तत्वै पण तं म जो य ॥ पये उप  
 ना धे तु वीषे ॥ त करत जी तु प समो य ॥ ९ ॥ त क  
 रत त्व तु प अं स हे ॥ धे तु श्री मत कुवे र ॥ नारण  
 दा स भी त नं र हा ॥ भए ली न फरे कु न फे र ॥ १० ॥  
 इती श्री श्री धांत बाव नी रं थे एका द शो अंग ११  
 चौप ई ॥ ववाठी क सम जो ए ही तं न सारा ॥ सां ष  
 योग नी जल सबी चार ॥ पथं म कु ह र्पु ल दे ह  
 की वि भग ती ॥ स्रोत सम जो ते ही ते हु न की मु ग  
 ती ॥ १२ ॥ अठ ग ह स्त षं ड प ग ट स री रा ॥ पथ वी त  
 त्व जा ग र त मं न वी रा ॥ वां णी वै ख री वी श्वा न र  
 अ मी मां नी ॥ दे ही स्त्री र जो गु ण वी सी या नं द  
 जां नी ॥ १३ ॥ म र त लो क त नु ए ही का वा स ॥ जा

सीद्धं

॥ ६ ॥

हीसे उपनापुनीताहीमे समासा ॥ स्थूलतनु  
तत्व एतते काही भये उ ॥ षगटवंड एही वीधीती  
रमये उ ॥ ३ ॥ देही सुक्ष्मजलतत्वही समंध ॥ सु  
प्रभवस्थासतोगुनवांणीमध ॥ तेजसअभी  
मांती भजनानंदभोगा ॥ जीवोस्मी सुरसमंध  
संजोगा ॥ ४ ॥ कारण देहअज्ञीतत्वही संजुग  
ता ॥ अहंकारअंतसकणससोपतीमुगता  
वांणीपसंती प्राज्ञकहीये अभीमांती ॥ गुण  
तमोहीयोगानंदबखांती ॥ ५ ॥ आत्मास्मीत्री  
गुणात्मकधामु ॥ माहाकारणतुकहुअवीयां  
तु ॥ माहाकारणवायुतत्वमततुरीया ॥ अंत  
सकणचीतपरावांणीवरीया ॥ ६ ॥ सुध्यसत्व  
णअव्याकृतअभीमांती ॥ बुंलानंदबुंलास्मी  
सक्तीधामजांती ॥ चतुरवीयुवीगत्येवीस्तारा  
वगारीकसमजोएहीतंतसारा ॥ ७ ॥ दोहा ॥ प  
रमकारणतभवतवहे ॥ नचंतपरातीतवांण्य  
स्वरुपास्मीतीरंजन ॥ अभीमांतीएहीजांण्य  
त ॥ नीरगुणतीरंजनधामहे ॥ उनमुनीस्वरु  
पानंद ॥ पंचतनुतत्वखोजके ॥ पायेहुपरमातं  
दा ॥ ४ ॥ पंचतनुपोहोचेनही ॥ जहांवसेश्रीमत्कु  
विर ॥ नारणदाससरणांगत ॥ मीटगयेतंतनअं

धेरा १० ॥ इती सीधात वाचनी गंथे द्वादशोऽनु  
 १२ ॥ चौपैई ॥ डडाडे हेरा अग्य मजां हां दी ना अ  
 धरत खत पर आसंन ची ना ॥ तां हां वे वे सं न  
 हरत मो रारी ॥ अनंत अनंत गल जी त ही ध्वी  
 न्यारी ॥ १ ॥ क्यौ करी करे कवन कवी कवता ॥ सं  
 न बुध ची तपो हो चत न ही चवता ॥ सेस सहस्र  
 कृती पार न पये ड ॥ सार दथ की हार दगु न गये ड  
 २ ॥ अधु धु धु मा प स्रवा ती त र्णानं ॥ उपमा यो  
 ग्य व र जी त र्ण व मा तं ॥ जो त स की त्री गु णा त्म  
 क ई ड ॥ ज स चार ण भु र गां धु व की ड ॥ ३ ॥ रु स्यी  
 मु नी गु नी ग्यां ती र ची प ची हा रे ॥ न ये ता स्र व  
 ना हे स ब से न्यारे ॥ उ त ई त जी त ती त व र जी त  
 वा ले ॥ न ये प दार थ व त क्यौ करी काले ॥ ४ ॥ ता  
 को क हु दृ षं त अ बु य ॥ जा ते स म जो स क ल नी  
 रू पा ॥ दी घं न सं म स्त सा क्षी सुर न्या रा ॥ अं स भा  
 स व्या प क उ जी या रा ॥ ५ ॥ दे ख त की स त्या डी घं  
 न कु नां ही ॥ अं से भा स चेत न भ ये तां ही ॥ कै व  
 ल सु र सा क्षी स र व न के ॥ वं स भा स व्या प क हे  
 ती न के ॥ ६ ॥ आ त्म अं श घ ट घ ट हे न्या रा ॥ न ये  
 धी का री वी ख रे हु ज बी वा हा रा ॥ त नो स्मी अं  
 स कृ ता को हु न ही चा न्य ॥ ड डा डे हे रा अ ग्यं म

**॥ सीधे ॥** जांहांदीता ॥ **दीहा ॥** धांम-अंमजांहांपती  
 वसे ॥ ताकेहुअंसअपार ॥ इतिआइजीततीत  
**॥ १० ॥** फसे ॥ कोहंमकुनकरतार ॥ ७ ॥ तवनीजपती  
 उरउपती ॥ मेहेरअतीमाहारज ॥ फसेनी  
 गमचुहुफंदमे ॥ पकरतजीवजमराज ॥ ८ ॥  
 हीफंदफनांकरतकु ॥ श्रीमत्कुवेरअवतार  
 नारणदाससरणांगत ॥ भयेजबकीयेभवपा  
**॥ १० ॥ इतीश्रीसीधांतवावनीगंधेत्रयोदशो**  
**१३ ॥ अंग ॥** ढहाढहायेअज्ञानगडभारी ॥ हर  
 हीनाथज्ञानखडकपसारी ॥ नीरवांणपदजग  
 काहरकीता ॥ ततेसकलसफाकरदीना ॥ १  
 नीरवांणयलक्षकहुहुमजबुता ॥ समरुतजेही  
 जंनहोयअबधुता ॥ बांनीबुनबवीपुनीरूप  
 समंधा ॥ त्रीगुणात्मकजीतसक्तीसबंधा ॥ २  
 दशुअवतारयार्वीपुवतसे ॥ एतन्येसकल  
 तनुजबतबतजसे ॥ तनुधरपक्षसवनएही  
 वीधीसे ॥ भयेउत्तपंतसबएनीजनीधीसे ॥  
 ॥ अवन्यकेभांडवनतसबभाव ॥ पेरवोसबही  
 मेक्षीतीएकसमावु ॥ कुलालबुजीतसबके  
 करनारा ॥ भांडथीभांडवतेनहीनीरधार ॥ ३  
 लघुदीरघभाजंनभीनघाट ॥ अवनसबमेए

करुपनी राटा भाजंतथीं नीनपुजापती जानो  
 अवनी मेघाट एकतही मानो ॥ ५ ॥ सुध्यसंकल्प  
 कुलालजब करही ॥ असक प्रवत्य उपरत ब  
 धरही ॥ जबही बनत एही घाट अपारा ॥ बनावे  
 नहार कुलाल हेन्या रा घा ॥ न्यारानी रवांग ओ  
 रली सब बांती ॥ सोई गंम जग भरको हुन जाती  
 ताति आये हुनी जपती तनु धारी ॥ ७ ७ ७ हाये  
 अज्ञान गड भारी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अद्वैत प्रवत्य द्वैत  
 भांडहे ॥ कुलालनी जकेवल ॥ सुध्यसंकल्पते सब  
 कीया ॥ आपही एकलमल ॥ ८ ॥ कोईके परवनमे  
 हेनही ॥ सबपष उनके जांण्य ॥ बांती बुनव सब  
 परवनकी ॥ द्वैतपदारथ वांण्य ॥ ९ ॥ नी जपद जाह  
 र करनकु ॥ श्रीमत कुवेर अवतार ॥ नारणादास स  
 रणांगत ॥ पायोनी जदेदार ॥ १० ॥ इती श्री सीधां  
 तवावती गंये चतुर्दशो अंगः ॥ १४ ॥ चौपई ॥ रेणा  
 रणाजीते सोई सुरा ॥ पीछानां हवे जो होय चक्रच  
 रा ॥ जीते जस जग जाहर यदमी ॥ सुवे अवधर  
 मां जहे कदमी ॥ १५ ॥ उभये हां एपनही सुरवसर भ  
 रही ॥ बीतहुही मत नर कुर कुर मरही ॥ सुरर  
 एतुर भभक भलगजे ॥ भये भयंकार या रनही  
 भाजे ॥ १६ ॥ रवीलत सहस्रवी इतवत भारी ॥ काहे

सीध

॥११

रनांवचहीसुगमलधारे॥सुरमंनपुरडरकरे  
दलकु॥जीतकेहरहीवीतगत्यकरेबलकु॥३  
पतीपरवसाचकरतहेसवाई॥सुरमनोरथ  
एहीफीरतदवाई॥तबमंनमांजमीलतमनोर  
थसे॥काहारभगतसजतनहीसदसे॥४॥राज  
परमगुरुसीससुरवीरा॥कालदलवीकटह  
तनससधीरा॥हमीलहमेसपदसदतोपताजा  
मंनकोवारुतगोलालक्षगडभाजा॥५॥सुनत  
गरजनासबभगगयेउ॥धरेनांधीरजसनमुष  
कोडरयेउ॥कामक्रोधमदमछरकरम॥दंभक  
पटअभीमांनछलवरम॥६॥एदशधोतका  
लभउनायके॥सुनीसदतोपअवाजभगजाय  
के॥योगसमेलक्षवंतद्रडपुरा॥रेणारणजीतिसो  
हीसुरा॥७॥दोहा॥जीतकीयावीतवेतही॥नीर  
वीततजेनीराल॥सतगुरुअमलअचरचर  
तबकपांहारेहेवेकाल॥८॥पतीगयेपरजाकसी  
नसीसबउनकीआल॥अबनीरभेसंतसुरमां  
देगुरुमांजदयाल॥९॥मोजअखंडदेसरनकी  
श्रीमतकुवेरमहारज॥नारणपदासगरीबकु  
घोअनुभवपटोधीराज॥१०॥इतीसीधोंतबाव  
नीगंधेपंचदशोअंगः॥१५॥चोपई॥तताते

नसुखजेहडुखकेसुला॥ करतहीमंदमीष्टान  
 भयेसुखा॥ वीनुवैरागलग्येदागतहीजाई॥ अं  
 तरमलतंतनरहेजेछवाई॥ १॥ अथंमकहुजेहीमं  
 दवईराग॥ सुनोजेलसणचीतमेअनुराग॥ सुत  
 दाराधंत्यधांमअवासु॥ ईछाघणीपणदांमन  
 हीपासु॥ २॥ खटरसस्वादसनेहअतीअघरा॥ ई  
 छेअतेरापुनीमीलतनसघरा॥ तबहीक्रोधमे  
 नबोधयोकरही॥ साधुमेसबेईसुषजांतीभे  
 खधरही॥ ३॥ लक्षणमंदवईरागकाजेरही॥ न  
 मीलेईछतमीलेकरतसनेही॥ सजनसुनोसा  
 धारणजेवईराग॥ सरगनांसुखसुणीलग्ये  
 अनुराग॥ ४॥ पोचतपुंत्यरुगजाईथीररहही  
 स्तीनभयेभवमेगीरेसबकहही॥ वैरागउत  
 सुनीसुनीजंतसाधे॥ मीथ्याभाषणमंनकबहुं  
 नांबाधे॥ ५॥ अगुटीमकांमध्यांतवतीराखे  
 देखीअनीत्यउदासीवतदाखे॥ गगंतगेंबयेब  
 नहीबकवाडु॥ सासुरसंपतीपणकरेनांवी  
 वाडु॥ ६॥ कहुवैरागतीवृततसारा॥ वीतरगी  
 कुलगतअतीप्यारा॥ संसारसरपफनीवत  
 पेखे॥ धरतकदमकाटतयौंदेखे॥ ७॥ आलोक  
 संघसुनीभयेडुखसुला॥ ततातंतनसुखजेह

॥ सीधं

॥ १२

उखकेमुला ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबतीरमलेवेरगकी  
सुनहोसंतसधीर ॥ सतवेकुंठकैलासमे ॥ सक्ती  
जोतसंमहीर ॥ ९ ॥ येतसेमेअटकेनही ॥ वरती  
वीमलवीसेस ॥ हलुलगयोयोकहतहे ॥ त्योव  
तधांमधीसेस ॥ १० ॥ सोईधांममेधणीवसे ॥ सो  
मथश्रीमतकुवेर ॥ नारणदाससरगंगत ॥ सो  
कौंफरेभवफेर ॥ ११ ॥ इतीश्रीसीधांतबावनीगं  
थियष्टदशोअंग ॥ १२ ॥ चौपई ॥ यथाथीरनां  
हीतलुधरमांही ॥ उपनासोईसबअंतवीलाई  
सुरनरअसुरसकलहीजीवा ॥ जेसेहीमारुत  
सेबुअवतदीवा ॥ १ ॥ जेताउतपनजगनांमधरावे  
तेतापलअवधीमेसबहीवीलावे ॥ सप्तपाताल  
सकलहीबुंदा ॥ परलेवीताधरननवरबुंदा  
२ ॥ परलेवीत्याजेत्यादजोरुबुंदा ॥ परलेवीत्यासु  
रजजोरुबुंदा ॥ परलेअजभवश्रीपतीसहीता  
परलेगुनीगांध्रवसेसदहीता ॥ ३ ॥ परलेक्षीती  
जलअगम्यनेपवनं ॥ आकाशअवीगतमहत  
त्वगवनं ॥ परलेउडघणसहीससुमारा ॥ परले  
मेरुसप्तदधीजेसंसारा ॥ ४ ॥ परलेखुलसुक्ष्म  
तंतजेही ॥ परलेकारणमाहाकारणतेही ॥ परले  
हीउजोरुमुसलमांत ॥ वरनचतुरयोलीनस



मोना ॥ ५ ॥ परलेजेरंकरायधंनवंता ॥ परलेषट  
 दरसेनमेहेमंता ॥ परलेभेरुवटेकजेनांबचही  
 परलेस्वांगअनेरातेसचही ॥ ६ ॥ परलेतही  
 स्त्रीसगुरुसंमग्याता ॥ पगटदीमरूपसोईसा  
 क्षाता ॥ नांमरूपगुंतकेगुरुनांही ॥ स्वरुपातं  
 दसदीदीतरहांही ॥ ७ ॥ जैसेगुरुस्त्रीसहीते  
 हीतेसे ॥ नीजग्यंमलसजथारथतेसे ॥ नांम  
 रूपगुनअवांतरजांही ॥ यथाथीरनांहीतनु  
 धरमांही ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वीष्टीसकलसमष्टीमे  
 होयलीननीरवंश ॥ यामेउबरेनांकछु ॥ एक  
 बीनानीजअंश ॥ ९ ॥ अंसअखंडईनमेरहा  
 गयासकलतंतनतुर ॥ परमगुरुनीजयतीम  
 ही ॥ मीलरहाभरपुर ॥ १० ॥ तेहीमीलावंनमे  
 हेरंम ॥ श्रीमत्कुवेरसतआया ॥ नारण्यदा  
 सचरणेवसे ॥ आसनअचलजमाय ॥ ११ ॥ इती  
 स्त्रीधांतबावनी गंधेसप्तदशोअंगः ॥ १२ ॥  
 चौपोददाडुरलभमनुषादेहीजांनो ॥ अधीक  
 डुरलभसतगुरुकोबांनो ॥ डुरलभभक्तीकरे  
 जंनजेहु ॥ डुरलभसंतसुअधीकसत्येहु ॥ १३ ॥  
 डुरलभचरनप्रकंमगुरुकी ॥ डुरलभहस्त  
 सेवाहरुभरुकी ॥ डुरलभस्ववंनसुनेगुनगा

॥सी ॥

या ॥ **दुरलभलक्ष्मणेनीजनाथा ॥ २ ॥** **दुरलभदी**  
गंनन्यालेगुरुसुरती ॥ **दुरलभप्रेमप्रनेंगप्रस**  
**फुरती ॥** **दुरलभगुरुकुप्रक्षानकरावे ॥** **दुरल**  
**भषीयचरणामृतपावे ॥ ३ ॥** **दुरलभगुरुभंग**  
**करनीतुष्ठावर ॥** **दुरलभयगपावडीपीतांमर**  
**सुंदीरसंगासनसोभाअधीकाई ॥** **दुरलभगु**  
**रुकुलेइपधराई ॥** **धाकेसरचंदनसुगंधचरचा**  
**ई ॥** **तीलकमनीहरभालवनाई ॥** **यागपटकेबु**  
**टजरकसीजांम ॥** **अधीकमनीजलजेजौघंन**  
**दांमा ॥ ५ ॥** **ललीततोरकलीकुसमहारही ॥** **ती**  
**रखीडीगंनतंतमंनसुधनांरही ॥** **चमरहीछ**  
**त्रबाजंम्रबहुबाजे ॥** **गुनीजंनगांतनीगंमघंत**  
**गाजे ॥ ६ ॥** **कतकयालप्रारतीसजलीनी ॥** **यो**  
**पवसीसंतसजंतहीकीनी ॥** **एसमेदरसनदुर**  
**लभभयांनो ॥** **ददादुरलभमनसादेहीजांनो ॥ ७**  
**दिहा ॥** **दुरलभदरसनएहीसमे ॥** **साष्टांगचरन**  
**सीरनाय ॥** **जोडीजुगलकरवीनती ॥** **अनंतबु**  
**ह्याडपतीराय ॥ ८ ॥** **प्रजभ्रहेतप्रलखगुनसुनी**  
**वरलहेनांपार ॥** **सोनीजपतीनरतनुधरी ॥** **दीना**  
**पगटदेदार ॥** **दीदरसनतेसबदुरवगया ॥** **तीरया**  
**श्रीमतकुवेरा ॥** **नारण्यदासधंन्यसरनकु ॥** **या**

यानी जघरमगसेरा ॥१०॥ इति श्री सीधांतवा  
 वनी ग्रंथे अष्टादशोऽङ्ग ॥१८॥ चौथे ई ॥ धधाधुंन्य  
 धंन्यधंन्यगुरुदाता ॥ अंशअपी लउतपंतनी  
 जताता ॥ तुमवीनाअवरनां डुजोदायक ॥ ती  
 वकीअरजसुनेये सोनहीनायक ॥ १ ॥ करत  
 उदयेप्रतीयालतेकरही ॥ प्रसवपोसणपये  
 ओरधीनसरही ॥ वतमेवाघजंबुकवंनमां  
 ही ॥ जुगलकोआहारभीनदोईनांही ॥ २ ॥ म  
 गडुरजंबुकीनांजीवपरचाले ॥ सेरसबसे  
 वडाजईजटकाले ॥ कालसेरजंबुकसुरलोका  
 ग्रसतकालभक्ष्यनसुरदोक ॥ ३ ॥ साडुरसां  
 मथग्रहेजीवअनेक ॥ अयत्यउतुकेमीलीक  
 रेदोउभोक ॥ कालसाडुरसुरअयत्यउतुके  
 दोउमीलीग्रासेजीवधेडेनांकीनुके ॥ ४ ॥ मो  
 हपासगेलरमोलेजगजीवके ॥ करतबंधम  
 घनीजयतीपीवके ॥ जबसेकीयेहुअंसतव  
 केअवसु ॥ खुदरवावंनपेहजुरनहीअंसु ॥ ५ ॥  
 तवकरुनाकरकरतबीचारा ॥ क्वाहभयो  
 कीनेरोकेयोसबसंसार ॥ ममअंशमोइत्येअ  
 धीकसुरवपयेग ॥ तवअटक्वाकेकीनेभरमये  
 उ ॥ ६ ॥ आपहीआपकनीजनैततेदेख्या ॥ फसे

स्त्रीघं

॥१४

इति फंद जीव ही सब पेरया ॥ सरवा ती त हे कर  
न जग स्रता ॥ धधा धं न धं न्य धं न्य ही गुरु दा  
ता ॥ ७ ॥ दोहा ॥ ज क प ती जीव तार वा ॥ धर त ही  
न र च्य यु वेश ॥ अ खंड ज्ञान अ द भू त म त ॥ नी  
रा धार का देश ॥ ८ ॥ आ धार को उन को हे न ही  
हे नी ज प्रा पे प्रा य ॥ जै पर से प द षी न मे ॥ पा य  
नां की ने रो का य ॥ ९ ॥ ब ड भा गी ते अं श हे ॥ अ  
हे श्री म त्त कु वे र च रं न ॥ ना र ए य दा स ग री व  
कु ॥ र वी ची लो य सु सर न ॥ १० ॥ इ ती स्त्री धां त  
वा व नी गं थे उ ग ल वी श सो अं ग ॥ ११ ॥ चौ प ई ॥ नं  
त्या न्या व न र दे ही नी ज सारा ॥ बी नु ह से व ट को  
हु उ त रे न पारा ॥ भ व सा ग र हे घे हे रो अ त्ती भा री  
वी म ल वी घं न प व वे कु न पारी ॥ १२ ॥ कां मा दी क स  
छ हे म तं ग अ पारा ॥ जी नु ग्रा स त त व षु टे नां ल  
गा रो ॥ ती र स त्व ना व र वे व ट हु सी पार ॥ मी ल ही  
जो ग तो षी न मे भ व पार ॥ १३ ॥ वे हे वा यु से सु द  
प द स न सु र व ॥ उ ल ट अ भा व भ व मे जां ती डु ख  
ए क वी घं न जे अ त ली ब ल भा री ॥ च म क वी शे ई  
डी र वी ल ग र हे सारी ॥ १४ ॥ त ल क ष ड ई डी अं त स सं  
जु ग त ॥ ज्ञान भ क्ती वै रा ग द्र म सु ग त ॥ मा स क  
अं श जे वे मी नी ज ला य क ॥ ज ड ज ड कु ग र हे कौ क

देनायक ॥ ४ ॥ हाथधीवातवटकीनहीकबजे  
 तीरकेपुरसचमकलायेतबजे ॥ होईगयेपारवी  
 घंनसबभागा ॥ गुरुसनेहवीसेभईअतुरागा  
 ५ ॥ इतिभवसागरतीतगुरुराया ॥ अनंगअस  
 कधीतीएकदृढाया ॥ फसेभवअसकवीसेगु  
 नवरती ॥ नसेतीतगुरुपीत्येमेवेहेफुरती  
 ६ ॥ प्रेमअसकवसगुरुसदहोई ॥ प्रेमअसक  
 वसवीसेभवभोई ॥ देखहीप्रेमगुरुकरेभवपा  
 रा ॥ नन्यान्यावतरदेहीनीजसारा ॥ ७ ॥ दोहा ॥ प्रे  
 मवीतानेमीजंत ॥ कबुहनयावहीपार ॥ प्रेमस  
 मरुसदउपजे ॥ तोदरसेनीजदेदार ॥ ८ ॥ एकल  
 प्रेमपोचेनही ॥ जहांहांजायफसाय ॥ जवसतग  
 रुयेउपजे ॥ प्रेमअसुलकेहेवाय ॥ ९ ॥ प्रेमनेमपी  
 त्येकरी ॥ धरोश्रीमतकुवेरसरंन ॥ तारणदा  
 सनीश्रेकहे ॥ मदिजतमनेमरंन ॥ १० ॥ इतीसी  
 शंतयावनीगंधेवीशमोअंगसमाते १० ॥ चौपे  
 पपाप्रगतपरमेश्वरएक ॥ ताईछोडनरपुजत  
 अनेक ॥ जंमकोहुजंनमदीशवशभयेउ ॥ पुर  
 वसमंधसुधबुधसुलगयेउ ॥ तनीअस्मीअ  
 सवततवेहेवार ॥ क्यांसेआयाकुनुहमेकुन  
 करतारा ॥ कहदृष्टंतजेअनोपमसारा ॥ जाते

सीधं

॥१५

समजो सब सुध्वी चारा ॥३॥ अही कुल ईष्ट ही  
से स छतरा जे ॥ ताई अंश अही ते सब वीखरो जे  
सुख मणी देखिये प्रवनी पर ॥ हा सवी नोधे  
इवही अचर चर ॥३॥ से सधां मतो हां रोसन स  
मीरा ॥ भुखप्या सकी लगत नही पीरा ॥ अक्नी  
उपर लगी हवा जबी भुख ॥ केते के दीन सहे भ  
या अती डुख ॥४॥ अक्षन करन सुख मणी सु  
ख महां य ॥ चारो चरन लगे छोडी मणी हं य ॥ गाई  
सुख मणी केरी क बहुन पावे ॥ से सकुमी लन के  
सा कं म करी जावे ॥५॥ बीछरत मणी खबर हो हे  
रु लता ॥ जाने कुन पावे को उएक मणी वलता  
सुभही असुभ क्रत भुगता दोई ॥ उंचनी चहोय  
से स पावे तां कोई ॥६॥ दृष्टांत की सतंध सी धांत  
सब जाने ॥ भुले नही भव मे सुघडन रमाने ॥ स  
बकी भागे भूल्य मी ले मणी छेक ॥ प पा पर गट  
ही पर मे श्वर एक ॥७॥ दोहा ॥ मणी वीन सरपन  
पावही ॥ से स को नीज अरुणान ॥ उपजे खपे अ  
वत्य पर ॥ करं कोटी क सयां न ॥८॥ पीछे अही  
पठवावत ॥ मणी प्रापी करी मे हेर ॥ म म सुत स  
ब अ वनी पर ॥ भेला करी लावो धे हेर ॥९॥ क्रता  
अं सकी जां ए जे ॥ साये श्री मत् कवेर ॥ नारण्य

दासकु कहत हे ॥ देउमम तु सबटे ॥ १० ॥ इति श्री  
 श्रीधरतवावनी गंधे एकवीशमो अंग ॥ चौप  
 फफा फेरजे श्री धांत समजावु ॥ समके तो संसे  
 सबही नसावु ॥ अनंत बंसांडपती से सबी राजे  
 असअही चराचर नीज राजे ॥ १ ॥ एही ममजाए  
 मणी दिई सबके ॥ प्रायेह चेतनते बडे ही ईतबके  
 स्वरूपानंद असक सुधानां ही ॥ संमरस भोगयो  
 गउनमां ही ॥ २ ॥ ईत आइ भई हे बेरां नीवृती भी  
 ना ॥ अनंत सकरण सुखजां एगई लीना ॥ गइ ली  
 नभये भी नक्रताके सरूपसे ॥ अनंत कल्पवी  
 त्येतबही के अबसे ॥ ३ ॥ जो गजगन जपतपवुत  
 करही ॥ फलही दायक क्रतावी जो गनटर्ही ॥  
 पढही सुननही मनन करेके ह ॥ क्रताको वीजो  
 गमीटेनही उनतेह ॥ ४ ॥ तीगमचतुरषटसाहा  
 रवी लोके ॥ पुरांन अठारईती हासअश्लोके ॥  
 रूपनधरमपुनी अनेक करावे ॥ घाजनभोज  
 नजगजसही सरावे ॥ ५ ॥ क्रतासेनां समधवी  
 जो गटलेनां ही ॥ अवरउपाय अनेक करेतां ही  
 तीजयक्षगुरुदक्षपक्षत्येनपयेउ ॥ तबलगी भू  
 मेभवमां ही भरमयेउ ॥ ६ ॥ पतीके वीजो गे सब  
 सुखतुष्टजांने ॥ सुघडसंतयाज्ञवंतपतीयांने

सीद्धो ॥ तब सरणंगतनीजमनलावु ॥ फफाफेरजेसीधो  
 तसमजावु ॥ ७ ॥ **॥ ७ ॥** पतीसुखलहेरतीवंतहे  
 १६ जुगमांसवसीरमेर ॥ अत्यमनुससतीनरनकी  
 जीनकाजसजगठेर ॥ ८ ॥ नशधीपतीपतीतीनो  
 प्रती ॥ तीनकोहस्तमेलाप ॥ सुखसागरग्रेहेसु  
 ब्रमे ॥ गयोतुष्टवुथाअदाप ॥ ९ ॥ अबअदापनही  
 कायका ॥ सीलेश्रीमतकुवेर ॥ नारणदाससर  
 णंगत ॥ सोनफरेभवफेर ॥ १० ॥ **इतीश्रीसीधो**  
**तवावनीगंधेबावीशमोअंगर ॥ चोपडी ॥ बबाबुद**  
 नगुरुपरमबीलोको ॥ जाईसरनमाहासुखलो  
 होलोको ॥ एहीसुखअजरअलोकीकआये ॥ भ  
 कीअनीनपणोरसेतेहीधाये ॥ ११ ॥ सरनसुखसु  
 खवरन्योनजाई ॥ सीजजनचरनमेरहोलोभा  
 ई ॥ भवगतीभुरजंतकुसुखनांही ॥ अटकोसब  
 करतवक्रतमांही ॥ १२ ॥ कलीतववेशवीधीनव  
 जांनी ॥ भुल्येहमवभरसबहीजांनी ॥ परमगुरु  
 पदअकलअनंतु ॥ गतीनहींपावेजेहीहयकेसं  
 तु ॥ १३ ॥ अकलकलागतीअग्यंमअनाडु ॥ नीगंम  
 साहारजाहांनहींनवीवाडु ॥ नभवीतभवेअ  
 नुभवकीगतीयां ॥ भवीतपदारथचवेसुहमती  
 यां ॥ १४ ॥ वादवीशेशकीनहींकोहुकरही ॥ द्रष्टांत



सुनो सबही चीत धरही ॥ दधी संमतोलनवां  
 एनां प्रावे ॥ सुरसंमता गती दीपकलजवे ५  
 पारसही संमद्रव्यकुलसराई ॥ सुरधे तुरध  
 अकलरहाई ॥ चंत्या मणीके सांमथ समतोल  
 उत संमता सरभरका प्राये ॥ ६ ॥ नभगती अ  
 कल अवाजरहाई ॥ परमवीशेषगुरुपरजे सो  
 हाई ॥ नखी पुपापसार सरवयोको ॥ बबाबद  
 नगुरुपरमवीलोको ॥ ७ ॥ दोहा बदनपरमगु  
 रूको जेही ॥ खवीत सरजंतनहार ॥ परममोक्ष  
 पदपावत ॥ नीजजंतजेही अधीकार ॥ ८ ॥ पर्स  
 करेगुरुचरनको ॥ सुकीतवंतनरजांण ॥ कल  
 करपकेकेदथी ॥ नीरभे होयनीरवांण्य ॥ ९ ॥  
 नीरवांणी जेही संतके ॥ सीरसांमथकुवेर ॥  
 नारण्यदासधंमसरनकु ॥ जगसीरकरेसमे  
 र ॥ १० ॥ इती श्रीसीधांतवावनी गंथे त्रेवीशमो  
 र ३ ॥ चौथेई ॥ भभाभक्तीरस्रपेमी जंतपीवे ॥ ६  
 एकबुधीनरकबुहनथीवे ॥ अजरपीयालापी  
 येमतवाला ॥ नीरवीसकतकोई गुरुकालाला  
 १ ॥ अनीनभक्तीभवडुरवही डुरवि ॥ लघुजीवस  
 बसेबडाहोईजावे ॥ भक्तीसे भूपचरनसीरना  
 वे ॥ भक्तीसे भोवंतमंदीरपधरावे ॥ २ ॥ भक्तीसे

अंग

॥ सीधें जात्यभात्यजुवेनांही ॥ ज्योपासांणामुरतीवत  
 तांही ॥ सहेटंकनत्रीभोवंनहीबुनावे ॥ ओर  
 ॥ १७ ॥ पथरपगसंबहीगसावे ॥ ३ ॥ तौसंसारसत्याग  
 डभारी ॥ गुरुसीलाटतोडप्रलगनीकारी ॥ टां  
 कनकसोटीसहेछीनछीना ॥ लब्धलगनएक  
 रसलोलीन ॥ ४ ॥ सुघटसीलाटगुरुचतुरसु  
 जांना ॥ छेदनसांरवभंतीस्वरूपनीघांनाओ  
 पीतलसप्रलोकीकप्रचाई ॥ साफसफाऊ  
 कस्वरूपदेखाई ॥ ५ ॥ पुतीष्टाकरगुरुसीरपर  
 धरीया ॥ जगजीवप्रनेकसरनआईपरीया ॥  
 गनतहीदिवदेवतजगपाई ॥ जनममरनडुष  
 डुरगमाई ॥ ६ ॥ भक्तीरसायंनधातुपलटावेब  
 रनचतुरपुनीसंतबनावे ॥ इष्टदग्धजंतकब  
 हुनछीवे ॥ भभाभक्तीरसपेसीजंतपीवे ॥ ७ ॥  
 दाहाभक्तीअनीनमणीचोटडे ॥ पडीमेदांनद  
 रसाय ॥ अनंतजीवहेरहवगये ॥ कोवीरलेली  
 नीउगाय ॥ ८ ॥ केसाउगावंनहारहे ॥ जेसानर  
 पतीसुत ॥ ओरनकुसोभेनही ॥ कृताअंसप्र  
 दभूत ॥ ९ ॥ भूल्यपडीसबअंसकु ॥ कुंतममकु  
 नकरतार ॥ केहेनारणतेहीकारणे ॥ आयिथ्री  
 कुवेरप्रवतार ॥ १० ॥ इतिश्रीसीधांतवावनीर्ग

येनामचौवीशोऽंगः॥२॥ चोपश्रममामरजी  
 वाकोईजगमे॥खलकः प्रासकतजेनाविभगमे  
 अहंमममुमतामांतबडाई॥तनोअसमीजीव  
 उनकुकहाई॥१॥सुतदारधंन्यधामसमेतातं  
 नवीगरेसरवसभयेजेता॥ज्यौपददग्धभया  
 हिनहीकांसु॥त्यौवदेहानंदकोवीसरंगु॥२॥  
 ग्रहेणकांत्यस्वांत्यमनसाधो॥सरवातीतनीज  
 लक्ष्मणाराधे॥आत्मसंगउपनाकीयाडुशीए  
 कःअंशवरजीतःप्रांत्यपुरी॥३॥पयेसंगतुपत  
 करदोऊजाये॥बीतुवरजीतकीयेतुपगमा  
 ये॥मधतदधीतत्वतुपउगरीया॥मृतकभये  
 भवभयेथीवगरीया॥४॥स्वायउधेईदारुकन  
 मीभयेउ॥अंगीग्रहतकीटभमरनीपयेउ  
 पसतपारसलोहारहेनहीजाती॥लडनभ  
 डनगडनकीगईनाती॥५॥साकरखोरुखग  
 पांहांनकुग्रासे॥करहीसकरपुनीउनकुही  
 प्रासे॥साकरखोरुखगबोधदक्षदायक॥जी  
 वपांहांनअंसकरेनीजलायक॥६॥सक्रतस  
 रतन्यारानहीरहेउ॥प्रांत्यजीवभरमतभ  
 वभयेउ॥जीवनसुक्रममोरथअंगमे॥ममा  
 मरजीवाकोईजगमे॥७॥दोहा॥मरजीवासु

**॥ सीधो ॥** स्कलगत्य ॥ रती एककुहु समजाय ॥ पीताम  
 तककीयासज्यो ॥ पुत्रीकरतबीहाय ॥ ७ ॥ सी  
**॥ १८ ॥** स्वमांतीलेमांनवी ॥ उपजीसंतसमाय ॥ उपजे  
 नहीपुनीक्यासमे ॥ सीमरजीवाकहाय ॥ १  
 मरजीवाकीमांजकु ॥ देवेश्रीमतकुवेर ॥ नार  
 एपदासधंत्यसरनकुं ॥ सबसेकरेसमेरा ॥ १०  
 इतीश्रीसीधांतवावनी ॥ ग्रंथेपंचवीशोअंगसं  
 २५ ॥ चौपैई ॥ यथाअवयेआवयेकोकरता ॥ यिसी  
 लक्षचौलक्षकोधरता ॥ ईडजरवांएपउतपंन  
 तंतसार ॥ एकवीशलक्षजातीअवतार ॥ १ ॥  
 उदबीजरवांएपवनस्पतीजाती ॥ एकवीशलक्ष  
 षगटभईताती ॥ स्वेजरवांएपजलतेजीवजमही  
 एकवीसलक्षतंतनभयेतेतंतमही ॥ २ ॥ जरायु  
 जजीवयडदेप्रगटाये ॥ एकवीसलक्षतंतनभी  
 नड्डाये ॥ एकवीचौकुचौरासीलक्ष ॥ चतुरवां  
 एअंनतंतनअवपक्ष ॥ ३ ॥ काकुहुकरताकी  
 चतुराई ॥ बुंदबीजमेसारीखलकबनाई ॥ ए  
 वन्येमेस्त्रेअमनुसअवतार ॥ पतीकुपेहेचाने  
 धंत्यधंत्यएहीसार ॥ ४ ॥ पतीबीनुलेहेतंतनड  
 एकीमुला ॥ जन्मजन्मप्रगटेक्रममुला ॥ ग्रभवा  
 सअतीत्रासहेअघरा ॥ शुगततजंमडंडनर

पुणः ॥

जेहो नघरा ॥ ५ ॥ एही दुखदेखी त्रास मोई पाये ॥ त्रा  
 ह चुहुदश अतल जराये ॥ उतरति जीतती त कया  
 होमम जावु ॥ जीत जावुती त अतल ही पावु  
 द्वा ॥ अरस्य पसारे करग्रहे मोई हाथ ॥ दिखुन  
 ही जुग भरतु मबी तुनाथ ॥ धंन्य गुरुनाथ ॥ अ  
 धर कर धरता ॥ यया अ वये आवये को करता  
 ॥ ६ ॥ दोहा ॥ नीज करबोध पसारके ॥ पकरलेतनी  
 जनाथ ॥ असंख जीव उबारेहुं ॥ धरी ज्ञान बहु  
 बाथ ॥ ७ ॥ राजीव तेन येन संतके ॥ सुखदाय  
 क संसार ॥ पीत्य करके चरणेवसे ॥ उतर गये  
 भवपारा ॥ ८ ॥ पार करन पधारेहु ॥ सोमथ श्री  
 मत कुवेरा ॥ नारादास सरणांगत ॥ ग्रहे गयो  
 भव फेरा ॥ ९ ॥ इती श्री सीधांत बावनी गंधेष्ट वी  
 श मोः ॥ १० ॥ चौपडी ॥ रेशरसी क अंम त फल मे  
 वा ॥ पवरावत ही परम गुरु देवा ॥ जग परमेहे  
 र करी मक बुता ॥ तब प्रगटे प्रसभये अवधुता  
 ॥ सवती त सरवेश्वर स्वामी ॥ सकल अंशके  
 अंतर ज्ञामी ॥ भवसागर वत अंश भयेउ ॥ अव  
 ये अंश वयेव सथ ईगयेउ ॥ ११ ॥ सेहुजात वरन कु  
 लनाती ॥ सेहुपुर सपीता भई जाती ॥ सेहुपुत्र मो  
 ईस सुरज माई ॥ सेहुकाका भतीज ममाई ॥ ३ ॥

॥ सीधें

॥ १६

मेहुं सगा सहो दर सौरा ॥ मेहुं सां मला लके गौरा  
के सरी म कट छंय पर तलये ॥ इरत कपी नीज  
तंन कुज लये ॥ ४ ॥ छंया ती त उन का हे नीजरु  
प ॥ वये मे अ वये थ ई ग यो हे गुय ॥ नां मरु प गुं न  
ए ही सब छाया ॥ उन ते परे अं स क पी रा या ॥ ५ ॥  
नां मरु प गुं न म ये सब भये उ ॥ हुता अ व ये व ये  
व स थ ई ग ये उ ॥ व ये व स त्ये वी प स भ ई भारी  
ज न म म र न पु ग ट भ ये जार ॥ ६ ॥ ज न म दु ष व्वा  
धी बु ह भ ये उ ॥ नी र स त्व नी र माल थ ई ग ये उ  
पर म गुरु ह की म प्र ग टे सुर व दे वा ॥ रेश र सी  
क अं म त फ ल मे वा ॥ ७ ॥ दो हा जां ना म त पु नी अ  
र स से ॥ अ नु भ व यं त्र उ त्तार ॥ प्रे म क टो री मां व  
रे ॥ खुर त न ली का सार ॥ १० ॥ ये त ना सर म ह की म  
कु ॥ द री दी कु क छु न्हां य ॥ त व ड र्वी या पी वि न ही  
भ ल ही म र म र्ज्हां य ॥ ११ ॥ म्हे र करी ड र्वी यां पर  
श्री म त्र कु वे र द या ल ॥ ना र ण य दा स सर र णां ग  
त ॥ टालो क्र म जं जाल ॥ १० ॥ इ ती सी धां त वा व नी  
रं थें स म वी शो अं गः ॥ १२ ॥ चौ पै री ल लाल ह  
ल गे जी न की सा था ॥ हो ई ते ही रू प म न भ रे ती  
तु बा था ॥ जो मं न कर र्वी क सब उ र्धारे ॥ हो ई  
ते ही रू प ती तु र्वे ल स धारे ॥ १३ ॥ जो मं न व र्णी क

को कर रही वे पारा ॥ ते ही रूप हो ईती तुग्र हेत त  
 सारा ॥ जो सत्री वट मंन उर धर ही ॥ ते ही रूप  
 हो ईती तु काम सद कर ही ॥ २ ॥ जो मंन बां सण  
 भेष धरा वे ॥ हो ईते ही रूप मत ते ही सण वे ॥ जो  
 मंन वी सी ये को कर ही वी चारा ॥ हो ईते ही रूप  
 प्रसन्न धी क प्र पारा ॥ ३ ॥ जो मंन योग उपर  
 जई भडु ही ॥ ते ही रूप हो ईती जतं न मे गड ही  
 जो मंन यंत्र मंत्र सद साधे ॥ हो ईते ही रूप तद  
 संमथ ई बाधे ॥ ४ ॥ साधत भुत मंन ते ही रूप  
 हो ई देव को वंदन मंन देव रूप जो ई ॥ थापत  
 पती मा जग भर सब ही ॥ करत प्रवे स मंन फल  
 त हेत व ही ॥ ५ ॥ सफुरण मन को चतुर दश भो  
 वंन ॥ ईत चरा चर चेतन मंन गवनां ॥ जो व ईश  
 ग मंन धरत सो हाग ॥ लोक चतुर दशन ही अ  
 नुराग ॥ ६ ॥ जो मन भक्ती उपर अनु सर ही ॥ जी  
 न की भक्ती तीन कु व स कर ही ॥ सो मन ज्ञान सं  
 ग गे हे बाथा ॥ लला लक्ष लगे तीन की साथा ॥ ७ ॥  
 दिहा संग सरी धारंग हे ॥ भी न मंन र हे न लगार  
 र वट दर सं न चौ संपदा ॥ बुह मत पंथ प्र पारा ॥ ८ ॥  
 जहां जहां मंन पत प्रायेह ॥ तहां तहां मन ते ही रूप ॥ म  
 ना तीत मन को पती ॥ सो पद मंन थी गुण ॥ ९ ॥ गु

सीहां

॥ २० ॥

सप्तगटपदकरनकु॥ श्रीमत्क्वेरप्रवतार  
नारणदाससरुंगागत॥ भयेहभयेतेभवपा  
रा॥ १० ॥ इतीसीहांतवावनीगंधेअष्टवीशोअं  
गः॥ ११ ॥ चौपाईववावेशधरेवीशुकेकारंन  
धरीदशरूपस्येअसुरजंनतारंन॥ प्रथंमप  
गटमष्टारूपतंतुधारे॥ तीगमचतुरअजबुच  
नडुचारे॥ १ ॥ तेहीतीगंमसंखासुरहरगये  
उ॥ मारीअसुरतीगंमपीछलयेउ॥ द्वैतीयो  
कषारूपधरोदधीजांही॥ मथंनसमयेसरग  
डगयोमांही॥ २ ॥ रतंनचौददधीमांहीसेतीका  
रे॥ तेहीकारंनहरीकषरूपधारे॥ त्रीतीयोवे  
राहप्रथवीस्थीरकरवा॥ मारीहरणाक्षजगको  
भयेहरवा॥ ३ ॥ चतुरथरूपनरसंगअयुधारे  
नखहीबीडारहरणाकंसमारे॥ जंनपेहेलादभ  
कतीजसाचे॥ प्रसंतभईहरीतीनपरराचे॥ ४  
पंचमोवांमनरूपधरोबलीकाज॥ पातालक  
दमदेईचांपीदीयोराज॥ छठेपसुरांमफरसी  
करलीनी॥ एकवीसवारतक्षत्रीजमीकीनी  
५ ॥ सेहेस्त्राअजुंतिअसुरसंघारे॥ मातपीता  
केकारजसारे॥ सप्तमोरघुवंशरावणवधकी  
नी॥ सतीसीताकोसाचहीचीन्यो॥ ६ ॥ अष्टमो



रूपकृष्णधरीआये ॥ गोपीगोवालनलाडलडाये  
 कंसआद्यहरोदुखदेनारंन ॥ भक्तजननकेकार  
 जसारंन ॥ ७ ॥ नवमोबुधजगसुधतहीजबही  
 धरतआत्यन्तरकोइतबही ॥ तीनइदेकर  
 तपवेसहीआये ॥ नवधाभक्तीलसजीनुजाये ॥  
 ८ ॥ दशमोकलंकीरूपजबधरही ॥ नकलंकरूप  
 पुसेपुतीतबही ॥ पापपुंन्यसुखदुखतहीदरसे  
 एकअखंडभगवांनहीपरसे ॥ ९ ॥ जुगनजुग  
 नजनहीतवीपुधारंन ॥ ववावेषधरेवीश्वकेका  
 रंन ॥ १० ॥ दोहा ॥ एहीदशअवतारंन ॥ तनुधरेवै  
 कुंठपतीराज ॥ जगपालनगुनसातीका ॥ आये  
 हश्रीमहराज ॥ ११ ॥ जेहीकारजकरननहरी  
 आईकीयेतेहीकांम ॥ उपलेकततनुकारज  
 करकेगयेसधांम ॥ १२ ॥ एहीवीधीजुगपतीपाल  
 न ॥ कषीखेतसंमलोक ॥ जुगनजुगनजसजाह  
 र ॥ सरगुनवीपुवीलोक ॥ १३ ॥ तेहीजसकेवसर्व  
 श्वही ॥ करतवीनोधवीलाप ॥ पणतलहतकर  
 ताखुदा ॥ ओरुआपनुजेहीआप ॥ १४ ॥ एहीपरका  
 रसकलकुल ॥ भयेअज्ञानचौवेन ॥ तबनीजपती  
 पठवायेहु ॥ सांमथश्रीमतकुवेर ॥ १५ ॥ सरगुनगु  
 नवीपुधारत ॥ जुगनजुगनबहुवार ॥ कुवेरकल

श्रीं

॥२१॥

पपरजंतही॥धरहीएकअवतार॥१६॥सोनीज  
पतीपदकीगंम॥ओरुआपनुजेहीआप॥तनु  
धरआद्यतलबएही॥करनकाजजनुथाप॥  
७॥थापकरतनीजआपनप॥कहनलसकीर  
तार॥नारणदासतेहीकारण॥कुवेरदीव्यअव  
तार॥१८॥इतीश्रीसीधांतबावुनीगंधेउगए  
त्रीशो १७॥अंग॥ससासाचीसतगुरुकीवां  
नी॥ओरबातकलपीतसबगंती॥तजीनीत्यु  
अनीत्यकुमजावे॥पतीपरवघोडकुपंथचलवि  
१॥ताकीकहुदृष्टांतबीचारी॥देवोनीजद्रीगं  
नसमऊपरेशारी॥दधीकोनीरसुरकीरणसो  
साई॥उरधयेअवन्यपरप्रसतपोसाई॥२॥ते  
हीजलसचरचराचरपरशु॥नदीनवांणभर  
तपणअरसु॥घोडीनीजपतीपरजावसभयेउ  
छुडघाटपनघनसीरतयेउ॥३॥उतपनउनसे  
लीनतांहांहोई॥देखतसरवमुढलहतनकोई  
पवतघोडतोहीलघुकरेसाचा॥अंतउनुमेखंडी  
तयेसमाचा॥४॥जलसेवनसपतीसीचतजीवा  
ई॥घोडीजलपुजतदुंमद्रुडताई॥सुरअंसअग  
नीपगतयेउ॥अतलअंसदीपकनीरमयेउ॥५॥सु  
रअगनीतजदीपसीरनाये॥देखोएजगतकीअ

कलही बनाये ॥ अकल पुरांनी गई जग सबकी ॥  
 नकल सकल कु उतपन प्रवकी ॥ ६ ॥ कीई जग म  
 सचान र भगता ॥ पती परबग्रही आंत्यत जे सब  
 व्यगता ॥ सत बचन वीर लाके हेजांनी ॥ ससा  
 साची सत गुरुकी बांनी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ सार शब्द स  
 त गुरुतणो ॥ असार शब्द जग जां एष ॥ दैतर मण  
 जां हां ल्यो लगे ॥ कहन ग्रहण सब हां एष ॥ ८ ॥ जीत  
 मे पती को पखनही ॥ अंत्ये दुख दे नार ॥ अलग रहे  
 अबसे सब ॥ ग्रहो पती पद सार ॥ ९ ॥ नीज पती प  
 द जन चाहे हो ॥ ग्रहो श्री मत कु वैर सरंण ॥ नार  
 एष दासती श्री कहे ॥ मीठे जन्म जो रूम रण ॥ १० ॥  
 इती श्री सीधांत बावनी गथे त्रीशो अंग ॥ ३० ॥  
 चौपरीषषाषी जो गुरु ग्यं म अती भारी ॥ खोजा वं  
 नहार मोर सदकी यारी ॥ बीनयारी एही अर  
 थन पावे ॥ विहेवंत पुनी अंत हीन जावे ॥ १ ॥ पाडु  
 बीनानी जयंथ ही कटना ॥ दीगंन बीना देखे वई  
 वटना ॥ अवन बीना सुने सुभवचना ॥ अमरत  
 पांन करे बीनु रसना ॥ २ ॥ मुख बीनगान सुरत  
 बीनु नीर खत ॥ अंत स क्रण हर दे बीनु हर ख  
 त ॥ बीना कुप उतपन जल भारी ॥ बीनु गा गर  
 जल भरे पती यारी ॥ ३ ॥ बीनु बाजां जां हां न्या दष

त्रीशु॥ बीनापुरसलक्षणवतीशु॥ बीनुत्रीचाजो  
 वीहारवीलासी॥ सुरजकीरगाजोंकरतकीला  
 सी॥ ४॥ बीनअगतीउघोतअपारा॥ बीनुघंन  
 वरखेअखंडाधारा॥ बीनुअवनीअचवनक  
 रेसबही॥ बीनाअंकुरउगेडुमतबही॥ ५॥ बीना  
 ससीसुरसकलसबसुके॥ बीनाकरसुरते  
 गोधजकुके॥ बीनासीरनायपायबीनुपरसे  
 बीनातनुतत्वसुरत्यषबीदुरसे॥ ६॥ बीनागु  
 रुगुरुसेवकबीनुसीसा॥ ईनकोअरथलहे  
 सोईमिमईसा॥ एतनोअस्यकीईगहतवीचा  
 री॥ षषाषीजोगुरुगुयंमअतीभारी॥ ७॥ दोहा॥  
 जहांगुरुगुयंमईतगुयंमनही॥ एसससासमजी  
 जोय॥ दीगनदेखेनहीसुरबीना॥ गुरुबीना  
 लहतनकोय॥ ८॥ हरीहरअजईडादीक॥ सुर  
 मनुसहीतप्रचंडा॥ बीनगुरुकोहनपावता॥ ईन  
 कीआद्यबुंसांडा॥ ९॥ प्रागटपरमगुरुकोकहु॥  
 श्रीमतकुवेरसाक्षात॥ नारादासबलहावही  
 जहांवीसदीनगुरुगुयंमवात्॥ १०॥ इतीश्रीसी  
 दंतवावनीगुंषेएकत्रीशेअं ३१॥ चौपेईशशा  
 सरजंनएकहरीवरीया॥ भक्तअनीनपतीवृता  
 वततरीया॥ सचराचरकेसांसांसरवेश्वराबुह

बलप्रकलगती परमेश्वर ॥१॥ प्रेमनेमपुरण  
 परबसाचे ॥ ज्योसतवंतीपतीपरराचे ॥ त्रीया  
 सनेहसुघडताजणवु ॥ पुरसएकगोचतुरद  
 शगणवु ॥२॥ चौदईडीपुनीअंशआधारा ॥ त्री  
 यासमलीतग्रहेअंगपसारा ॥ करतअंगछेद  
 नडुषपतीकु ॥ पुरसनरीमेसुधस्नेहसेसती  
 कु ॥३॥ अंससहीतईडीअंगपुरसा ॥ लहेभीन  
 अंगसतीएककरेउरसा ॥ वृततसेवभीनमे  
 वएकभाव ॥ पतीवृताकोएहीनीजदाव ॥४॥ क्र  
 ताजीवनचरअचरअनादी ॥ चउदईडीदेव  
 कीयेहसवादी ॥ ईडीचेतनचराचरचेतनही  
 भोवंनचतुरदशअंगजडतनही ॥५॥ अखंडस्व  
 रूपसाम्प्रपतीराजे ॥ सुघडसंतपतीवृतावत  
 वाजे ॥ अंगसुसंगभीनसेवकाई ॥ समलीत  
 चरअचरागतीपाई ॥६॥ जांहीसेछेदनममप  
 तीदुरवमाने ॥ पुरणेश्वरपीयुअंशकेजांते ॥ प  
 तीसंगेसुखसुधासंमदरीया ॥ शशासरजंन  
 एकहरीवरीया ॥७॥ दोहा ॥ पुणानंदपरमेश्वर  
 अपुरणकहानवजाय ॥ जेजांतेअपुरणहरी  
 सीथ्याजनमगमाय ॥८॥ भीनमानेबुहमतंत  
 शीलहेतनीजपदएक ॥ ज्योतरीयावीवीचारणी

**सी** ॥ मांनतपतीअनेक ॥ १ ॥ हस्तमेलापतीनसेभया  
 सोपतीश्रीमत्कूवेरा ॥ नारण्यदासपतीवंतहे  
 ॥ २३ ॥ पुरसएकतीनुहेरा ॥ इतीश्रीसीधांतबावनी  
 गंधेवत्रीशामोअंगः ॥ ३ ॥ चौपा ॥ हेहाहरीगुरु  
 कस्वरुपा ॥ ताकोकुहृदंताअनुपा ॥ कनककुं  
 दलदोउतांमधराये ॥ जुगलतांमवस्तुएकपाये  
 १ ॥ नाजभोजनभीनतांमधरेहु ॥ पदारथउभये  
 नदृष्टपरेहु ॥ पुस्यवासनातुपमेस्वाहु ॥ हरीगुरु  
 पदयेमदेरवोअनाहु ॥ २ ॥ सुखदायकगुरुअधी  
 कसराई ॥ कुहसमकदेरवोद्रीगंतफीराई ॥ माहा  
 अज्ञीनीजअरुपअनादी ॥ उतसेप्रगटसुरस  
 बसुखनादी ॥ ३ ॥ आद्यअगत्यतीमरनहीहरही  
 सुरसेकांमअनंतपुनीसरही ॥ अज्ञअभाक्ता  
 अरुपअखंड ॥ भोक्तासरुपसुरनीत्यतहीपीड  
 ४ ॥ माहाअज्ञीकेवलसरवजे ॥ गुरुसुरअघती  
 मरकरेतगने ॥ ज्ञानप्रकाशभयाजगमांश्री ॥ स्रव  
 सुखदायकगुरुसुखसांश्री ॥ ५ ॥ एहीममयारपा  
 रकरेपलमे ॥ अनंतवंतांडपतीदेवेतीजदलसे  
 मंगलसुरतीमनोजलजावंत ॥ असंखजीवअ  
 घवंतकीयेपावंत ॥ ६ ॥ खुदमालकमनोरथज  
 वकरही ॥ नीजपतीइतगुरुकातनुधरही ॥ जं

नतारंनप्रभुधरेनीजरुपा ॥ हेहाहरीरुकरु  
 स्वरुपा ॥ ७ ॥ **दीहा** चोदतबकपरतखतहे ॥ माल  
 कसबकासोय ॥ उनकेअंससबबीरवरेहा ॥ उ  
 लटगयेनहीकोय ॥ १ ॥ तेहीअंसउलटावंनश्री  
 मत्कुवेरईतःप्राय ॥ नारण्यदासअबकैपोफ़ीरे  
 रह्योचरनलपटाय ॥ २ ॥ अनंतअंससरणेहीये  
 करीमुगताहलज्ञान ॥ जोंघंनयेथावरबीज ॥ उ  
 देहोययोंजान ॥ १० ॥ एरुककरुनासघंनघंन ॥  
 जगजीवबीजगअपार ॥ पुसतपोठपस्रवभ  
 ये ॥ दरसतनीजदेदार ॥ ११ ॥ संमत्प्रागणीसा  
 लअष्टमी ॥ सकसालीवाहंन ॥ वीरोधक्रतस  
 मछर ॥ असादुसुदबीजदंन ॥ १२ ॥ भोम्यवारने  
 पुस्यनक्षेतर ॥ रथजात्रानोयोग ॥ गंमपेपीपत्नी  
 यामायकीधोअसुरभीनगतीभोग ॥ १३ ॥ करु  
 णाकरकरुणाकरी ॥ रह्यारुदेमेनीजरुप ॥ म  
 नबांतीमेवसीरह्या ॥ वीसरेनांदीगतसरुप  
 ॥ १४ ॥ रोमरोममेरमीरह्या ॥ श्रीमत्कुवेरसाक्षा  
 त् ॥ नारण्यदासनीमीतमात्र ॥ अरोपणवचना  
 त् ॥ १५ ॥ इतीश्रीसीधांतवावनीगंथेत्रेत्रीशोअं  
 गा ॥ ३३ ॥ इतीश्रीसीधांतवावनीगंथसंपूर्णः ॥  
 समाप्तः ॥ संवत् १९२६नामाहावीदी १ ॥ संपूर्ण